कौन बनेगा करोड़पति के बहाने

डॉ. सुशील जोशी

अब तो देखते-देखते थक व ऊब चुके हैं कि कौन बनेगा करोड़पति। और एक करोड़पति तो बन भी चुका है। लेकिन शायद अधिकांश लोग मेरे इस आकलन से असहमत होंगे कि केबीसी उबाऊ हो चला है। तो सवाल यह है कि क्यों?

मैं उन सवालों में नहीं जा रहा हूं कि ऐसे 'शो' में वाकई कौन कमाता है, कहां से इतना पैसा बंटता है वगैरह। मेरा सवाल थोड़ा अलग है। आखिर इस 'शो' में धरा क्या है? यह तो कहना होगा कि अमिताभ बच्चन बहुत अच्छे अभिनेता हैं और वे शो को एक गरिमा प्रदान करते हैं। उनके चेहरे पर बोरियत का भाव, कौन बनेगा करोड़पति खेलने की उत्सुकता में मलते हाथ, और ज़्यादा व आसानी से पैसा न बांट पाने की उनकी लाचारी सब कुछ बहुत बढ़िया ढंग से प्रस्तुत होता है।

लेकिन बार-बार के वही डायलॉग, वही स्थिर-सा सीन आखिर कब तक देखा जा सकता है। यह भी सही है कि पूरे 'शो' की सेटिंग बहुत लाजवाब है। आपको कभी पता नहीं चलता कि यह खेल चल कहां रहा है। कोई स्टेडियम है, हॉल है, धरती पर है, आसमान में है कहां है? ऑडिएन्स की बात बार-बार होती है मगर वे नज़र नहीं आते। धुंधलके में एहसास होता है कि शायद कोई है। यानी कुल मिलाकर एक काल्पनिक-सी दुनिया का एहसास मिलता है। लेकिन इस दुनिया में भी कब तक दिल लगाएं?

पता नहीं रेटिंग्स क्या हैं, कितने प्रतिशत लोग रात 9 से 10 बजे के बीच क्या करते हैं मगर इतना तो कहा ही जा सकता है कि काफी लोग केबीसी को देख रहे होते हैं। क्यों?

लोगों की रुचि के कई कारण हो सकते हैं। अमिताभ बच्चन, 'शो' की उत्तेजना, किसे कितना पैसा मिला वगैरह। आइए कुछ कारणों पर विचार करें।

मेरे विचार से सबसे पहला और महत्वपूर्ण कारण है पैसा। सवाल इतने आसान कि मुझे लगे, 'काश मैं वहां होता।' वाकई कई बार तो सवाल इतने आसान होते हैं कि लगता है पैसा बांटने का यह उतावलापन क्यों है? और फिर उन आसान सवालों में भी तीन 'लाइफ लाइन' और उन सबसे बढ़कर 'हिन्ट्स' देते खुद अमिताभ बच्चन। कुल मिलाकर लगता है कि पैसा संभाले न संभल रहा है। यह चीज़ हर व्यक्ति को सपने में करोड़पति बना देती है। कई लोग बताते हैं कि वे कई दिनों से फोन लगाने की कोशिश कर रहे हैं मगर कमबख्त लगता नहीं। बस एक बार फोन लग जाए...।

इस 'शो' को देखने का एक बड़ा कारण (कम से कम लोग ऐसा कहते तो हैं) 'जनरल नॉलेज' भी है। लोगों को लग रहा है कि केबीसी देखकर उनके बच्चों का (और शायद खुद का) ज्ञानवर्धन होगा। देखिए ना सोमवार से गुरुवार सिर्फ स्टार टीवी पर रात 9 से 10 बजे के बीच कोई 25-30 सवाल पूछे जाते हैं। यानी प्रति सप्ताह सौ-सवा सौ सवाल होंगे। उनके जवाब भी बताए जाते हैं। और ये सारे सवाल तथाकथित जनरल नॉलेज के होते हैं। लिहाज़ा यह 'शो' देखने-दिखाने से जनरल नॉलेज सीखने में मदद मिलेगी।

जल्दी ही केबीसी की किताबें बाज़ार में बिकने लगें, तो किसी को आश्चर्य नहीं होना चाहिए। उनमें वे सारे प्रश्न और उत्तर होंगे जो हफ्तेवार केबीसी में पूछे गए थे और साथ में अमिताभ बच्चन का पोस्टर मुफ्त मिल सकता है।

हमारे यहां जनरल नॉलेज की स्थिति ऐसी ही है। बच्चे अन्य विषयों की तरह जनरल नॉलेज भी रटते हैं। इसे भी एक विषय माना जाता है। इसे किसी व्यक्ति की आम जागरूकता या देश-समाज में रुचि का परिचायक कदापि नहीं माना जाता। शायद प्रतियोगी परीक्षाओं में या नौकरी के लिए साक्षात्कारों में व्यक्ति की विषय में निपुणता जांचने के अलावा यह जांच करना भी ज़रूरी समझा जाता है कि कहीं वह व्यक्ति किताबी कीड़ा तो नहीं है। इसलिए उसके जनरल नॉलेज अर्थात सामान्य ज्ञान की भी जांच की जाती है। शायद एक समय पर सामान्य ज्ञान के बारे में यह सोचा जाता था कि यदि कोई व्यक्ति रोज़ाना अखबार पढ़े, रेडियो सुने

और आंख-कान खुले रखे तो उसे सामान्य ज्ञान रहेगा।

इसी प्रकार से विभिन्न प्रतियोगी परीक्षाओं में एक अभिरुचि परीक्षण (एप्टीट्यूड टेस्ट) भी होता है। इसमें यह जांचा जाता है कि सम्बंधित कोर्स या नौकरी के लिए ज़रूरी अभिरुचि उस व्यक्ति में है या नहीं। अभिरुचि एक ऐसी चीज़ है जो बरसों में विकसित होती है। इसमें तमाम किस्म की सामाजिक पारिवारिक अन्त: क्रियाओं, शिक्षा व अन्य गतिविधियों का योगदान रहता है।

किन्तु धीरे-धीरे जनरल नॉलेज व अभिरुचि (तथा और बहुत कुछ) उद्योग बन गए हैं। सामान्य ज्ञान के विकास हेतु विशिष्ट किताबें मिलती हैं। जिस जनरल नॉलेज की जांच व्यक्ति को किताबी कीड़ा बनने से रोकने के लिए शुरू की गई थी, उसने व्यक्ति को एक और किताब में कैद कर दिया है। जब यह हुआ कि जनरल नॉलेज रटकर तैयारी होने लगी तो परीक्षकों ने भी रुख बदला। वे और भी कठिन 'जनरल नॉलेज' पूछने लगे। यह जनरल नॉलेज रोज़मर्रा के जीवन (समाज, राजनीति, मनोरंजन, खेलकूद वगैरह) से दूर होता गया। और धीरे-धीरे निरर्थक तथ्यों का अम्बार ही जनरल नॉलेज बन गया। अब तो प्रतियोगी परीक्षाएं अपने आप में एक उद्योग हैं और जनरल नॉलेज उसका एक भाग है।

लिहाज़ा आज निरर्थक, असंगत तथ्यों को याद रखना और बेमतलब उन्हें उगल देना एक आवश्यक हुनर है। केबीसी इस धारणा को एक विचित्र तरीके से बढ़ावा देता है। वह इन निरर्थक तथ्यों को उगलने पर भारी भरकम इनाम भी देता है। इससे भी मज़ेदार बात यह है कि केबीसी में प्रत्येक तथ्य का मूल्य बराबर नहीं है। कोई तथ्य आपको 1000 रुपया दिलवा सकता है, तो कोई उतना ही असंगत तथ्य एक करोड़ रुपया दिलवा सकता है। पहले भी क्विज़ होती रही हैं। पहले भी सवाल-जवाब होते रहे हैं मगर इतना 'शोशा' कभी नहीं रहा। क्विज़ को इतनी 'प्रतिष्ठा' कभी नहीं मिली। वैसे भी हमारी शिक्षा रटने पर टिकी है। जनरल नॉलेज भी रटने पर आधारित हो गया। तर्कशक्ति को रट डालते हैं बच्चे। अभिरुचि रट डालते हैं और अब इस प्रवृत्ति को धन का ज़बर्दस्त ईंधन मिल रहा है।

हम सिर्फ उम्मीद कर सकते हैं कि जल्दी ही मेरी तरह अन्य लोग भी इस शो से ऊब जाएंगे, इसे ज्ञानवर्धन का एक साधन मानना बन्द कर देंगे और ज्ञान के वास्तविक स्रोत यानी जीवन को देखने का समय निकालेंगे। ***(स्रोत विशेष फीचर्स)***

डॉ. सुशील जोशी : एकलव्य के होशंगाबाद विज्ञान शिक्षण कार्यक्रम से जुड़े हैं। साथ ही स्वतंत्र विज्ञान लेखन व अनुवाद करते हैं।